# MT

Seat No. | | | | | | | |

**2018 .... .... 1100**

**MT - HINDI (ENTIRE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - I - PAPER - V**

**Time : 3 Hours** **Preliminary Model Answer Paper** **Max. Marks : 100**

## विभाग 1 - गद्य

**उ.1. (क) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।** **(8)**

**(1)** **(i) उत्तर लिखिए।** **1**

(1) खरीद सस्ती-से-सस्ती हो और बिक्री महँगी-से-महँगी।

(2) मुनाफे की कोई मर्यादा नहीं।

**(ii) गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -** **1**

(1) मनुष्य किसके कारण व्यवहारिक बनता है?

(2) विद्यालय में कौन शिक्षा प्राप्त करते हैं?

**(2)** **कृति पूर्ण कीजिए।**

(i) **1**

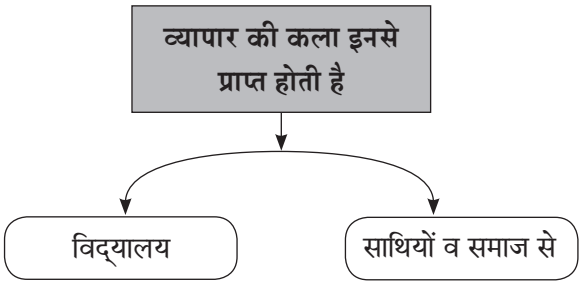


(ii) **1**

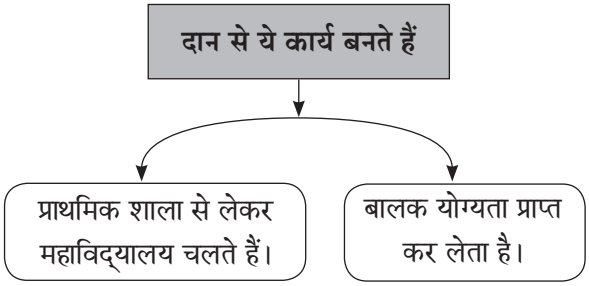


**(3)** **पाठ में कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनके विलोम शब्द भी पाठ में ही प्रयुक्त हुए है; ऐसे शब्द ढूँढ़कर लिखिए।** **2**

(i) महँगी × सस्ती (ii) विक्री × खरीद

(iii) देश × विदेश (iv) सही × गलत

**(4)** हमारे देश में मुट्ठीभर लोग अमीर हैं और अधिकतर लोग गरीब हैं जिन्हें दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती है। यह आर्थिक विषमता का ही परिणाम है। आज के युग में अमीर और अधिक अमीर बनता जा रहा है तथा गरीब और अधिक गरीब बनता जा रहा है। इस आर्थिक विषमता के कारण सामाजिक बुराइयाँ बढ़ रही हैं। हिंसा, बेरोजगारी, मानसिक तनाव, अपराध, भ्रष्टाचार, काला धन, सामाजिक तनाव, अशांति आदि का समाज में वर्चस्व आर्थिक विषमता के कारण ही बढ़ रहा है। आर्थिक विषमता के कारण ही शहर व गाँव के बीच खाई बढ़ रही है। गाँवों में बिजली व शिक्षा की सुविधा आदि का भारी अभाव दिखाई दे रहा है। इसलिए आर्थिक विषमता को दूर करने का उपाय सरकार को शीघ्र ही खोजना चाहिए। **2**

**उ.1. (ख) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।** **(8)**

**(1) कारण लिखिए।**

(i) क्योंकि उनके पिता ने उन्हें सामाजिक आंदोलनों में जाने से कभी नहीं रोका था। **1**

(ii) क्योंकि जवाहरलाल जी की माँ जिस मेडिकल कॉलेज में दाखिल थीं, उसी समय अमृतलाल जी का छोटा भाई भी उस मेडिकल कॉलेज में दाखिल था। **1**

**(2) संजाल पूर्ण कीजिए।** **2**

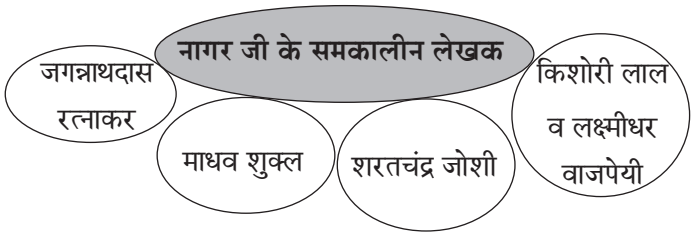


**(3) (i) नीचे लिखे शब्दों के अर्थ गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।** **1**

(1) देहात - गाँव (2) मुलाकात - भेंट

**(ii) परिच्छेद में प्रयुक्त शब्द युग्म व विदेशी शब्द ढूँढ़कर लिखिए।** **1**

(1) शब्द-युग्म - आता-जाता, कौन-कौन, संपर्क-प्रभाव

(2) विदेशी शब्द - मेडिकल कॉलेज, जेल

**(4)** 'सामाजिक आंदोलन एवं व्यक्ति विकास' इनका आपस में बहुत गहरा संबंध है। देश की आज़ादी से पहले कई प्रकार के सामाजिक आंदोलन हुए। इन सामाजिक आंदोलनों ने समाज में क्रांति स्थापित करने का कार्य किया था। लोगों ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेकर सामाजिक आंदोलनों की शक्ति बढ़ाई थी। सामाजिक आंदोलनों ने लोगों को इंसाफ के लिए लड़ने की प्रेरणा दी। लोगों को अच्छी-बुरी प्रथाओं से सतर्क बनाकर शिक्षा के लिए प्रेरित किया। इन्हीं सामाजिक आंदोलनों का प्रभाव देश के साहित्यकारों पर भी पड़ा। उन्होंने आंदोलनों से प्रेरणा लेकर भारत के उत्थान हेतु साहित्य की रचना की। इस प्रकार सामाजिक आंदोलन व्यक्ति विकास में सहायक सिद्ध हुए। **2**

| | | |
|---|---|---|
| उ.1. | (ग) अपठित परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : | (8) |
| (1) | (i) आकृति पूर्ण कीजिए। | |
| | (1) 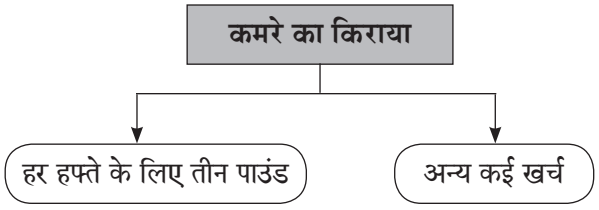  | 1 |
| | (2) 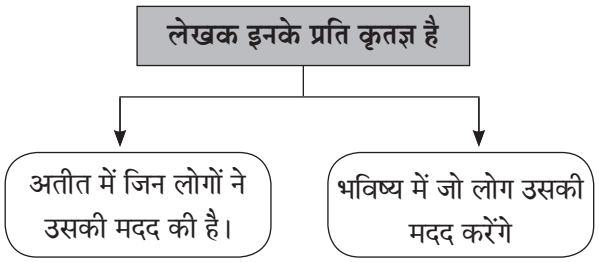  | 1 |
| (2) | उत्तर लिखिए। | 2 |
| | (i) इंग्लैंड | |
| | (ii) अपना कर्तव्य | |
| | (iii) सब कुछ के लिए उन्हें अपनी जेब से खर्च करना पड़ता है और उनकी आमदनी कम है। | |
| | (iv) आत्मरक्षा | |
| (3) | लिंग पहचानकर लिखिए। | 2 |
| | (i) जेब - स्त्रीलिंग (iii) साहित्य - पुल्लिंग | |
| | (ii) दावा - पुल्लिंग (iv) सेवा - स्त्रीलिंग | |
| (4) | 'कृतज्ञता' का अर्थ है कृतज्ञ होने का भाव। यह एक महान गुण है। यह मनुष्य का एक ऐसा आभूषण है, जिसे धारण करने से हमारा भी भला होता है और दूसरों को भी प्रेरणा मिलती है। जब कोई व्यक्ति हमारे लिए कुछ करता है, तो उसके प्रति हमें कृतज्ञ होना चाहिए। ईश्वर ने हमें सब कुछ दे दिया है, अत: हमें उसके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। हम अपने प्रति कभी भी और किसी भी रूप में की गई सहायता के लिए आभार प्रकट करते हैं और कहते हैं कि 'हम आपके प्रति कृतज्ञ हैं और इसके बदले में जब भी अवसर आएगा, अवश्य ही सेवा करेंगे।' इसलिए कहा गया है कि 'कृतज्ञता मनुष्य की अनमोल निधि है।' | 2 |

## विभाग 2 - पद्य

**उ.2. (च) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :** **(6)**

**(1)** **(i) आकृति पूर्ण कीजिए।** **2**

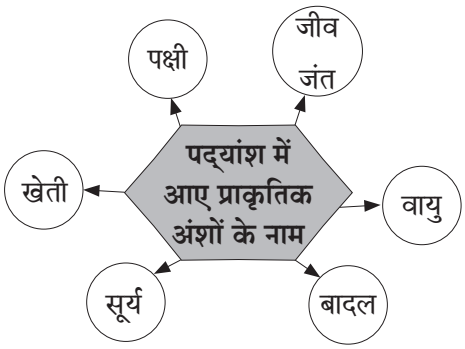


**(2)** **समझकर लिखिए।** **2**

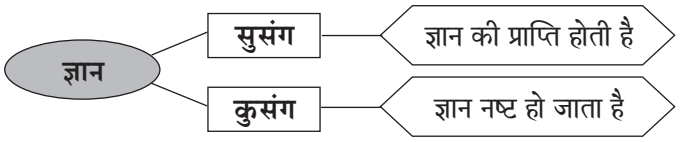


**(3)** **निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।** **2**

श्री राम लक्ष्मण से कहते हैं ''हे अनुज, धरती कई तरह के जीवों से भरी हुई उसी तरह शोभायमान है जैसे सुराज्य पाकर जनता की वृद्धि होती है। जिस प्रकार ज्ञान उत्पन्न होने पर इंद्रियाँ शिथिल होकर विषयों की ओर जाना छोड़ देती है। वैसे ही सुराज्य में सर्वत्र पथिक थककर एक जगह पर ठहरे हुए हैं।''

**उ.2. (छ) निम्न मुद्दों के आधार पर निम्न कविता का पद्य विश्लेषण कीजिए:** **(6)**

(i) **अपनी गंध नही बेचूँगा**

(1) **रचनाकार का नाम:** बालकवि बैरागी **1**

(2) **रचना का प्रकार :** गीत **1**

(3) **पसंदीदा पंक्ति :** **1**

बिकने से बेहतर मर जाऊँ अपनी माटी में झर जाऊँ
मन ने तन पर लगा दिया जो वो प्रतिबंध नहीं बेचूँगा।

(4) **पसंदीदा होने का कारण:** उपर्युक्त पंक्ति में फूल अपने स्वाभिमान और सम्मान के लिए मर जाना और मरकर मिट्टी में झर जाना अधिक पसंद करता है। वह इस निर्णय पर किसी भी कीमत पर अडिग रहना चाहता है। यदि व्यक्ति में सम्मान और स्वाभिमान की भावना न हो तो उसका जीवन निरर्थक होता है। **2**

| | | |
|---|---|---|
| | (5) **कविता से प्राप्त संदेश या प्रेरणा :** स्वाभिमान ही जीवन है। स्वाभिमान के बिना जीवन निरर्थक होता है। स्वाभिमान से व्यक्ति की सम्मान व प्रतिष्ठा बनी रहती है। | **1** |
| | **अथवा** | |
| (ii) | **कृषक गान** | |
| | (1) **रचनाकार कवि का नाम -** कवि दिनेश भारद्वाज | **1** |
| | (2) **रचना का प्रकार -** आधुनिक सामाजिक काव्य | **1** |
| | (3) **पसंदीदा पंक्ति -** क्षीण निज बलहीन तन को, पत्तियों से पालता जो,<br>ऊसरों को खून से निज, उर्वरा कर डालता जो,<br>(विद्यार्थी अपनी पसंदीदा काव्य पंक्ति लिख सकते हैं।) | **1** |
| | (4) **पसंदीदा होने का कारण -** उपर्युक्त पंक्ति में किसान की दुर्दशा का वर्णन किया गया है। परिस्थिति प्रतिकूल होने के बावजूद भी किसान कड़ी मेहनत करता है और बंजर जमीन को उपजाऊ बनाता है। अर्थात प्रतिकूल परिस्थिति में भी वह हिम्मत नहीं हारता बल्कि संघर्ष करता रहता है। इसलिए यह पंक्ति मुझे बेहद पसंद है। | **2** |
| | (5) **रचना से प्राप्त प्रेरणा -** किसान हमारे देश का अन्नदाता है, परंतु आज वह जीवन की मूलभूत सुविधाओं से वंचित है। हमारा यह कर्तव्य है कि हम सब भारतीय एकत्रित होकर किसान को उसका खोया सम्मान एवं प्रतिष्ठा स्थापित करके रचनात्मकता की ओर एक अभियान चलाएँ। | **1** |
| | **अथवा** | |
| (iii) | **समता की ओर** | |
| | (1) **कविता के कवि/रचनाकार का नाम** : कवि मुकुटधर पांडेय | **1** |
| | (2) **काव्य प्रकार** : छायावादी काव्य | **1** |
| | (3) **पसंदीदा पंक्ति** : हमको भाई का करना उपकार नहीं क्या होगा,<br>भाई पर भाई का कुछ अधिकार नहीं क्या होगा। | **1** |
| | (4) **पसंदीदा होने का कारण** : प्रस्तुत पंक्तियाँ समाज में अमीर भाइयों को गरीब भाइयों की भलाई के बारे में विचार करने के लिए प्रवृत्त करती है। इन पंक्तियों में समाज से अमीरी-गरीबी का भेदभाव दूर करके समता स्थापित करने की बात बताई गई है। इसलिए प्रस्तुत पंक्तियाँ मुझे बेहद पसंद हैं। | **2** |

| | | |
|---|---|---|
| | (5) **कविता से प्राप्त संदेश** : विश्व-बंधुत्व जैसी मानवीय भावना को अपनाकर एक-दूसरे के साथ बंधुत्व का व्यवहार करना। | **1** |
| उ.**2**. | **(ज) अपठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :** | **(6)** |
| **(1)** | (i) **आकृति पूर्ण कीजिए।** 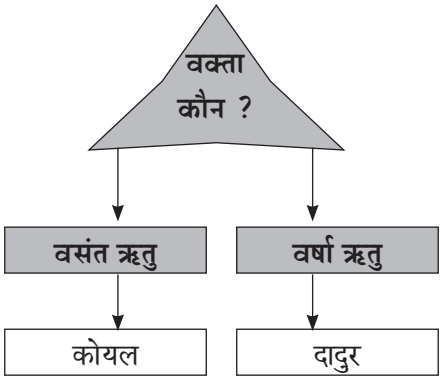  | **1** |
| | (ii) **कृति पूर्ण कीजिए।** 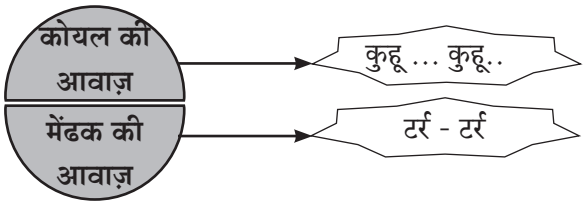  | **1** |
| **(2)** | **(i) दोहे में आए प्राणियों के नाम लिखिए।**<br>(1) मेंढक (2) कोयल | **1** |
| | **(ii) समानार्थी शब्द लिखिए।**<br>(1) कोयल - कोकिल (2) मेंढक - दादुर | **1** |
| **(3)** | **निम्नलिखित पठित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।**<br>कवि रहीम के अनुसार मनुष्य को सही समय आने पर ही अपने गुण प्रकट करने चाहिए। वे कहते हैं कि प्रतिकूल स्थिति में हमें मौन धारण करना चाहिए। जिस प्रकार वर्षाऋतु आने पर मेंढक टर्र-टर्र करने लगता है और कोयल प्रतिकूल स्थिति भाँपकर मौन धारण कर लेती है। वर्षाऋतु के ऐसे प्रतिकूल समय में कोयल के गुणों को कोई महत्त्व नहीं देता। ऐसी परिस्थिति में कोयल का मौन धारण करना ही उचित होता है। | **2** |

## विभाग 3 - पूरक पठन

**उ.3. (अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।** **(4)**

**(1) संजाल पूर्ण कीजिए।** **2**

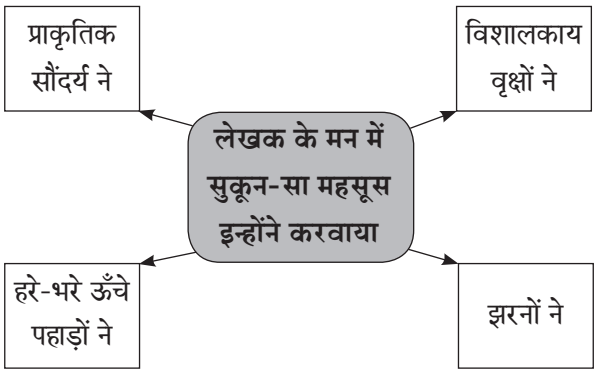


**(2)** परिच्छेद के आधार पर स्पष्ट है कि प्रत्येक धनसंपन्न व्यक्ति मन से कंगाल नहीं होता। फिर भी आमतौर पर कुछ धनसंपन्न व्यक्ति मन से कंगाल होते हैं। वे स्वयं की ऐशोआराम की जिंदगी पर लाखों रूपये खर्च करते समय पीछे नहीं हटते हैं, लेकिन किसी गरीब व्यक्ति से कुछ खरीदते समय अथवा उसे पैसे देते समय आनाकानी करते हैं। वे दिखावे के लिए लाखों-रुपये खर्च कर देते हैं पर किसी गरीब को उसकी कमाई मजदूरी या पैसे देते समय आनाकानी करते हैं। उन्हें कभी-भी किसी गरीब की गरीबी या बेबसी पर दया नहीं आती है। वे सिर्फ स्वयं के बारे में ही सोचते हैं। सचमुच, यह कुछ अमीर वर्ग के लोगों की संकुचित मानसिकता ही है। **2**

**उ.3. (आ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :** **(4)**

**(1) (i) सही या गलत पहचानकर गलत वाक्य को सही करके फिर से लिखिए।** **1**

(1) गलत, झगड़ने से बातें और उलझ जाती हैं।

(2) सही।

**(ii) निम्नलिखित अर्थ को स्पष्ट करने वाली पंक्तियाँ लिखिए।** **1**

(1) यों आप खफा क्यों होती हैं, टंटा काहे का आपस में।

(2) बस बात पते की इतनी है, ध्रुव या रजिया भारत माँ के

**(2)** स्त्री व पुरुष एक समान होते हैं। कोई एक-दूसरे से बड़ा या छोटा नहीं होता। समाज को चलाने का कार्य उनके द्वारा ही होता है। यदि उन दोनों में से किसी एक की कमी हो, तो समाज व देश नहीं चल सकता है। दोनों एक-दूसरे के कंधे से कंधा मिलाकर काम करते हैं। आज हर एक क्षेत्र में पुरुष के साथ स्त्री भी कार्य करती दिखाई दे रही है। दोनों मिलकर भारत देश के विकास के लिए कार्य करते हैं। दोनों की समाज में अपनी अहमियत होती है। दोनों का अस्तित्व समाज व देश के लिए अत्यावश्यक होता है। परिवार भी दोनों के आपसी सांमजस्य व सहयोग से ही चलता है। इसलिए कहा गया है स्त्री व पुरुष समाज के प्रमुख अंग है। **2**

## विभाग 4 - व्याकरण

**उ.4. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :** **(18)**

**(1)** (i) **निम्नलिखित वाक्य में आए हुए संज्ञा शब्दों को रेखांकित करके उनके भेद लिखिए।** **1**

**युवकों** : जातिवाचक संज्ञा  **दल** : समूहवाचक संज्ञा

(ii) **निम्नलिखित वाक्य के रिक्त स्थानों में उचित सर्वनामोंका प्रयोग कीजिए।** **1**

इसके बाद **वे** लोग दिन भर पणजी देखते रहे।

**(2)** (i) **निम्नलिखित वाक्य में से अव्यय पहचानकर उसका भेद लिखिए।** **1**

**कि** : समुच्चयबोधक अव्यय

(ii) **निम्नलिखित अव्यय शब्द का वाक्य** में प्रयोग कीजिए। **1**

**बाद** - संबंधसूचक अव्यय :

**वाक्य** - पता नहीं उसके बाद क्या हुआ ?

**(3) कालपरिवर्तन कीजिए।**

(i) अली घर से बाहर चला गया। **1**

(ii) आराम हराम हो गया है। **1**

**(4) तालिका पूर्ण लिखिए ।** **2**

| संधि | संधि-विच्छेद | भेद |
|---|---|---|
| सप्ताह | सप्त + अह | स्वर संधि |
| अंतर्चेतना | अंत: + चेतना | विसर्ग संधि |

**(5)** (i) **अर्थ के आधार पर निम्न वाक्य के भेद पहचानिए।** **1**

मिश्र वाक्य

(ii) **सूचना के अनुसार निम्न वाक्य का प्रकार बदलिए** **1**

क्या मानू इतना ही बोल सकी ?

**(6)** (i) **मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में उचित प्रयोग कीजिए।** **1**

**कलेजे में हूक उठना** : मन में पीड़ा होना

**वाक्य**: अपने मृत बेटे की याद आते ही बुढ़िया के **कलेजे में हूक उठने** लगती है।

(ii) **निम्न वाक्य में अधोरेखांकित शब्द समूह के लिए कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए।** **1**

करामत अली हौले-से लक्ष्मी (की पीठ) पर **हाथ फेरने लगा।**

**(7) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके फिर से लिखिए।**

(i) आचार्य अपने शिष्यों से मिलना चाहते थे। **1**

(ii) लड़के की तरफ मुखातिब होकर रामस्वरूप ने कुछ कहना चाहा। **1**

**(8)** **निम्न वाक्य में से मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया पहचानकर लिखिए।** **1**

मुख्य क्रिया - दिखना  सहायक क्रिया - लगा (लगना)

**(9)** **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम तथा द्‌वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए।** **1**

| अ.क्र | क्रिया | प्रथम प्रेरणार्थक | द्‌वितीय प्रेरणार्थक |
|---|---|---|---|
| (i) | माँगना | मँगाना | मँगवाना |
| (ii) | तोड़ना | तुड़ाना | तुड़वाना |

**(10)** **निम्नलिखित वाक्यों में उचित विरामचिह्नों का प्रयोग कर वाक्य पुन: लिखिए।** **1**

''जल्दी-जल्दी पैर बढ़ा।''

**(11)** **निम्नलिखित वाक्य के रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित कारक चिह्नों से कीजिए और कारक का नाम लिखिए।** **1**

पर्यटन **से** बहुत भी आनंद मिला।

**से -** करण कारक

## विभाग 5 - रचना विभाग (32)

**उ.5.** **(अ)** **5**

(i) दिनांक - १५ मार्च, २०१८

सेवा में,

श्रीमान स्वास्थ्य अधिकारी जी,

महानगर पालिका,

अमरावती - ३५५४२१

**विषय :** अशुद्‌ध जल की आपूर्ति के संबंध में शिकायत पत्र।

माननीय महोदय,

मैं आपके शहर का एक निवासी हूँ। बड़े दुख के साथ आपको सूचित करना पड़ रहा है कि पिछले कई दिनों से शहर में अशुद्‌ध जल की आपूर्ति की जा रही है। अशुद्‌ध जल पीने से सारा शहर महामारी की चपेट में आ गया है। लोग डायरिया जैसी भयंकर बीमारी के शिकार हो रहे हैं। महानगर पालिका के अधिकारी अब तक अनजान बने हुए हैं और नगर निवासी परेशान हैं। शुद्‌ध जल की आपूर्ति के बिना बीमारी पर नियंत्रण पाना असंभव है। यदि समय रहते ध्यान न दिया गया तो स्थिति और भी बिगड़ सकती है।

अत: आपसे प्रार्थना है कि जनहित को ध्यान में रखते हुए तत्काल उचित कार्यवाही करने की कृपा करें।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

धन्यवाद!

| | | |
|---|---|---|
| | भवदीय,<br>महेश शर्मा।<br>नाम : महेश शर्मा<br>पता : गांधी नगर,<br>अमरावती - ३५५४२१<br>ई-मेल आईडी : mahesh@gmail.com | |
| | **अथवा** | |
| (ii) | १० जनवरी, २०१८<br>प्रिय मित्र निकेतन,<br>सप्रेम नमस्ते।<br>निकेतन, तुम कैसे हो ? आशा करता हूँ कि तुम ठीक होगे। मैं भी यहाँ पर ठीक हूँ।<br>कल ही मैंने समाचार पत्र में पढ़ा कि तुम्हें जिला विज्ञान प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह समाचार पढ़कर मैं फूला न समाया। इसलिए तुम्हें हार्दिक बधाई देने के लिए मैं यह पत्र लिख रहा हूँ। तुम्हें विज्ञान में बेहद रूचि है। तुम हमेशा विज्ञान से संबंधित पुस्तकों का वाचन करते रहते हो। मुझे तुम पर बहुत गर्व महसूस हो रहा है। मुझे याद है, तुमने विज्ञान प्रदर्शनी के लिए मॉडल एवं प्रकल्प तैयार करने के लिए पिछले महीने से ही तैयारी शुरू कर दी थी। आखिर, तुम्हारी मेहनत रंग लाई और तुम्हें प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। तुम्हारे द्वारा निर्मित यह प्रकल्प तुम्हारी सृजनात्मकता एवं प्रतिभा की गवाही देता है। सचमुच, तुम मेरे मित्र हो, यह मेरे लिए बड़ी खुशी की बात है। मेरे परिवार वालों ने भी तुम्हें हार्दिक बधाई दी है।<br>और क्या लिखूँ ? तुम्हारी प्रशंसा के लिए मेरे पास शब्द ही नहीं है। जैसे ही ग्रीष्मावकाश शुरू हो जाएँ वैसे ही तुम मेरे घर पर रहने के लिए आ जाना। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा। अपनी माता जी एवं पिता जी को मेरा सादर प्रणाम कहना।<br>.....<br>कुमार संदेश जोशी<br>२०२, पारिजात,<br>नारायण मार्ग,<br>मुंबई ४०० ०२०.<br>kumarsandesh16@gmail.com | **5** |
| **(2)** | (i) श्री. सी. वी. रामन ने कौन-से क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का सिक्का देश-विदेश में जमा लिया था ?<br>(ii) ध्वनि के संबंध में कुछ प्रयोग कौन कर रहा था ?<br>(iii) रामन का साथी अपनी कठिनाइयाँ लेकर किसके पास गया ?<br>(iv) रामन का साथी जोन्स साहब के पास क्यों गया ?<br>(v) रामन की प्रतिभा की भूरि-भूरि प्रशंसा किसने की ? | **5** |

उ.6.

(1) **वृत्तांत लेखन ।** 5

**अपने विद्यालय में मनाए गए किसी समारोह का वृत्तांत**

**दिनांक १५ सितंबर २०१७ मुंबई:** शारदा विद्यालय, मुंबई में दिनांक १४ सितंबर २०१७ के दिन सुबह ९:०० बजे बाल-दिवस के अवसर पर विद्यालय के सभी शिक्षकों एवं प्रधानाचार्य जी ने छात्रों को हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। सुबह ठीक ९ बजे विद्यालय के सभागार में समारोह की शुरुआत हुई। सर्वप्रथम प्रधानाचार्य श्री. राजेश शिंदे जी ने सभी छात्रों को संबोधित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। पश्चात विद्यालय की कुछ महिला अध्यापिकाओं ने नृत्य प्रस्तुत कर सभी छात्रों को मंत्रमुग्ध कर दिया। जैसे ही नृत्य खत्म हुआ वैसे ही छात्रों के लिए कई प्रकार के खेलों का आयोजन किया गया। खेल खेलते समय छात्रों का उत्साह देखने लायक था। सभी छात्रों ने बाल–दिवस के अवसर पर विद्यालय में उपस्थित सभी शिक्षकों को धन्यवाद दिए। इस प्रकार १ बजे समारोह खत्म हुआ।

(2) **निम्न मुद्दों के आधार पर विज्ञापन तैयार कीजिए।** 5

**पुस्तक प्रेमियों व पाठकों के लिए स्वर्णिम अवसर**

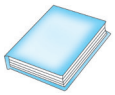



इंद्रलोक सभागृह में दिनांक ६ दिसंबर २०१७ भव्य पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है।

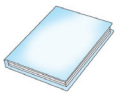



विज्ञान, गणित, भाषा व साहित्य विषयक पुस्तकों की प्रदर्शनी !

शैक्षणिक, व्यावसायिक, साहित्यिक पुस्तकों का भंडार !

विविध ज्ञानप्रद पुस्तकें, शैक्षणिक, नैतिक मूल्य, नवीन शोध - प्रविधियों से परिपूर्ण पूस्तकें

पुस्तक की खरीदी पर **३०%** छूट

**पुस्तक है हम सबकी सच्ची साथी ।**
**आओ जलाएँ इनसे ज्ञान की बाती।**

**तिथि : ६ दिसंबर २०१७**
**समय : प्रात: १० से रात ९ बजे तक**

(3) **'परहित सरिस धर्म नहिं भाई'** 5

विजयपुर नगर में संजय नाम का एक अमीर जमींदार रहता था। वह बहुत ही दयालु एवं परोपकारी था। यदि लोग उसके पास दान या सहायता के लिए आते तो वह उनकी जरूर से सहायता करता था। उसके द्वार से कोई भी खाली नहीं लौटता था। वह सबकी मदद करता था।

एक दिन उस नगर में एक साधु आया। उसे जमींदार के बारे में लोगों से पता चला कि वह सबकी मदद करता है। इसलिए साधु भी उसके घर गया। साधु को देखते ही संजय ने उसके पाँव छुए और उन्हें बैठने के लिए कहा। उसने बड़े प्यार से साधु का सत्कार किया और उसके खाने का भी प्रबंध करवाया। साधु ने उसके घर में ही अपना डेरा जमाया।

साधु बहुत ही धूर्त व्यक्ति था। उसने संजय को अपने वश में कर लिया और उसकी सारी संपत्ति लिखवा ली। पश्चात उसने संजय को घर से निकाल दिया। संजय अपने परिवार के साथ वहाँ से निकला और जंगल में आकर रहने लगा।

एक दिन उस जंगल में वही साधु शिकार करने आया। एक बाघ का शिकार करते समय वह घायल हो गया। उसे जंगल में खून से लथपथ पड़ा हुआ देखकर संजय ने उसकी मरहम-पट्टी और सेवा की। उसे पता था कि यह वही साधु है; जिसने उसकी सारी संपत्ति हड़प ली थी। फिर भी उसने साधु की सेवा की और उसे मरने से बचाया। आखिर कहा ही गया है: 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई।'

**सीख :** परोपकार से बढ़कर अन्य कोई धर्म नहीं। हमें एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए। हमें किसी के साथ बुरा व्यवहार नहीं करना चाहिए।

**अथवा**

**(4)** (i) **मेरा प्रिय वैज्ञानिक** **7**

''भारत माँ का अमर सपूत,
माँ का मान बढ़ाने आया।
परमाणु के शांतिपूर्ण उपयोग में,
अपना हाथ बढ़ाने आया।''

हमारे देश में कई महान वैज्ञानिकों ने जन्म लिया। जिन्होंने अपने कार्य से भारत देश को उन्नति के शिखर तक पहुँचाया। मैं जिनके कार्यों से अत्यंत प्रभावित हूँ, वे हैं - डॉ. होमी जहाँगीर भाभा। ये मेरे प्रिय वैज्ञानिक हैं।

जब पूरा विश्व सभी क्षेत्रो में प्रगति कर रहा था, परमाणु-ऊर्जा जब एक चर्चा का विषय था, उस समय भारत इस क्षेत्र में कहीं भी नहीं था। लेकिन तभी भारत माता के इस अमर सपूत ने अपने परमाणु उर्जा के ज्ञान की चकाचौंध से दुनिया को चकित कर दिया। आज भारत ने परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में जो कुछ किया, हमारे देश में जितने भी परमाणु - शक्ति स्टेशन हैं, वहा डॉ. भाभा के सफल प्रयासों की वजह से हैं। हमारे देश में परमाणु-ऊर्जा कार्य की शुरुआत १९४५ में डॉ. भाभा ने ही की थी। वे ही 'भारतीय परमाणु ऊर्जा कमिशन' के प्रथ सभापति थे। डॉ. भाभा का जन्म ३० अक्टूबर, १९०९ को मुंबई में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा भी मुंबई में हुई। स्नातक होने के बाद वे उच्च शिक्षा के लिए कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय गए।

अपनी पढ़ाई के दौरान उन्हें बहुत से वजीफे और मैडल प्राप्त हुए। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में उन्होंने फर्मी और पौली जैसे वैज्ञानिकों के साथ काम किया। १९३७ में भाभा ने कॉस्मिक किरणों के क्षेत्र में वॉल्टर हिटलर के साथ काम किया। अपने इस कार्य के लिए उन्हें बहुत प्रसिद्धि मिली। १९४० में वे भारत लौट आए। १९४५ में डॉ. भाभा ने टाटा अनुसंधान संस्थान की स्थापना की। एक कुशल वैज्ञानिक होने के साथ डॉ. भाभा एक कुशल शासक भी थे। उनके कुशल नेतृत्व में भारतीय वैज्ञानिक परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में तेजी से प्रगति करने लगे। उनके इन्हीं प्रयत्नों के फलस्वरूप, १९४५ में एशिया का पहला परमाणु रिएक्टर मुंबई के निकट ट्रॉम्बे में स्थापित किया गया।

१९५५ में जेनेवा में हुए संयुक्त राष्ट्र की परमाणु के शांतिपूर्ण उपयोग के लिए हुई सभा का प्रतिनिधित्व भी डॉ. भाभा ने किया। डॉ. भाभा ही पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने परमाणु बम पर रोक लगाने की पहल की थी। डॉ. भाभा अपनी योग्यता के बल पर ही पहले प्रधानमंत्री पंडित नेहरू और दूसरे प्रधानमंत्री श्री लालबहादूर शास्त्री के वैज्ञानिक सलाहकार थे। डॉ. भाभा के संरक्षण में पहला परमाणु शक्ति स्टेशन तारापुर नगर में बनाया गया। १८ मई, १९६४ को भारत का पहला न्युक्लियर संयंत्र पोखरन (राजस्थान) में डॉ. भाभा के अनुसंधान कार्य के फलस्वरूप स्थापित किया गया।

कुल मिलाकर डॉ. भाभा की वैज्ञानिक सफलताएँ गिनी नहीं जा सकती। ये महान वैज्ञानिक २५ जनवरी, १९६६ में एक वायु दुर्घटना की वजह से स्वर्गवासी हो गए। डॉ. भाभा के सम्मान में ट्रॉम्बे में स्थित परमाणु ऊर्जा संस्थान का नाम 'भाभा परमाणु अनुसंधान' कर दिया गया। डॉ. भाभा एक अच्चे कलाकार भी थे। उन्हें साहित्य और कला में विशेष रुचि थी। उनका जीवन अत्यंत सीधा और सरल था। वे एक अच्छे वक्ता और मधुरभाषी थे। अपने इन महान उपलब्धियों और गुणों की वजह से न सिर्फ वे भारत के बल्कि पूरी दुनिया के चहेते थे। इस महान वैज्ञानिक की जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम है।

**''विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे वह,**
**नाम था - होमी जहाँगीर भाभा।**
**अपने ज्ञान के बल पर जिसने,**
**जीत लिया था दिल दुनिया का।''**

(ii) **मैं हिमालय बोल रहा हूँ.....** **7**

**मेरे नगपति! मेरे विशाल!**

**साकार, दिव्य, गौरव विराट्,**
**पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल!**
**मेरी जननी के हिम-किरीट!**
**मेरे भारत के दिव्य भाल!**
**मेरे नगपति! मेरे विशाल!**

राष्ट्रकवि दिनकर की ये पंक्तियाँ मेरे ही सम्मान और श्रेष्ठता को स्थापित करती हैं। जी हाँ! मैं संसार का सबसे ऊँचा पहाड़ हूँ। इसलिए तो मुझे नगपति व गिरिराज भी कहते हैं। मैं बर्फ का घर हूँ। मुझ पर हमेशा बर्फ जमी रहती है। मैं उत्तर भारत में सहस्रों मील तक फैला हुआ हूँ। आखिर भारत देश का दिव्य भाल हूँ। मेरी ऊँची चोटियाँ प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं। आदिकाल से मेरा महत्त्व है। भारतीय पुराणों में मेरा वर्णन किया गया है। पुराणों के अनुसार भगवान शंकर मेरे ही पर्वत 'कैलाश' पर निवास करते हैं। मेरे आँचल में बद्रीनाथ, केदारनाथ, अमरनाथ आदि प्रसिद्ध तीर्थस्थल हैं। यहाँ पर प्रतिवर्ष बहुत सारे लोग आते हैं। मेरा प्राकृतिक सौंदर्य देखने के लिए लाखों पर्यटक आते हैं।

पर्वतारोहियों के लिए मैं एक सुखद जगह हूँ। क्या आपको पता है, दुनिया के विभिन्न प्रदेशों से आए हुए, कई लोगों ने मेरे सर्वोच्च शिखर एवरेस्ट की चढ़ाई की है। यदि मैं न होता तो देश के अधिकतर उत्तरी बाग में मरूभूमि होती। मैं मानसूनी हवाओं को रोककर रखता हूँ। इसी कारण उत्तर भारत में जोरों

से वर्षा होती है। इसी कारण यहाँ की नदियाँ पानी से भरी होती है। ग्रीष्म के महीने में सूर्य की रोशनी के कारण मेरी चोटियों से बर्फ पिघलने लगती है और वह जल के रूप में नदियों से बहने लगती है।

मैं एक मनोरम रम्य स्थल हूँ। मेरे चारों ओर प्राकृतिक वैभव बिखरा हुआ है। देवदार व चीड़ जैसे ऊँचे-ऊँचे पेड़ मेरी शोभा बढ़ा रहे हैं। रंग-बिरंगे पक्षी व जानवर मेरी गोद में आनंद से रहते हैं। मेरे पास आयुर्वेद का भंडार है। विविध प्रकार की जड़ी-बूटियों का मेरे पास संग्रह है। मेरे वनों से लोगों को फल-फूल, लकड़ियाँ, गोंद आसानी से मिल जाते हैं। लोगों को कागज बनाने के लिए लुगदी भी मैं ही प्रदान करता हूँ।

इसी कारण महाकवि पंत जी लिखते हैं -

**समाधिस्थ सौंदर्य हिमालय**
**आत्मानुभूति लय**
**हँसता जहाँ अशेष**
**ज्योतिर्भूमि जय भारत देश।**

❖❖❖